हिन्दी नाटकों में विघटित पारिवारिक मूल्य का विवरण

Sudha

Research Scholar, Monad University, Hapur (UP)

----------♦----------

मूल्य : शब्दार्थ :

मूल्य शब्द अपने निहितार्थ में कदाचित मानव जीवन से सर्वाधिक गहराई से जुड़ा रहा है। मनुष्य एवं मूल्य परस्पर इतने सम्ब(हैं कि मूल्य का अस्तित्व मनुष्य का परिचय बन गया है। आदमी के भीतर की सोच मूल्यों का आधार है। मूल्य शब्द उपयोगिता का सूचक है। किसी भी वस्तु की उपयोगिता समय अथवा अवस्थानुसार घट या बढ़ सकती है।

वैयाकरणिक दृष्टिकोण से यह शब्द प्रतिष्ठा अर्थ को वाचक मूल्य धातु के साथ यत् प्रत्यय के योग से निष्पन्न हुआ है। तदनुसार 'मूल्य' शब्द का शाब्दिक अर्थ हुआ–प्रतिष्ठा के योग्य। अंग्रेजी भाषा में 'मूल्य' शब्द का पर्याय 'वेल्यू' से है, जिसका अर्थ है–अच्छा, उपयोगी, समर्थ या शक्तिशाली।

फ्मूल्य किसी पदार्थ की ऐसी विशेषता या खूबी है जिसका ठीक पता उसके परखने पर चलता है और जिसका पता चलने पर चेतना उसकी ओर एक प्रशंसनीयता के भाव से प्राकृष्ट हाती है और उसकी यथा योग्य प्राप्ति को उचित मानती है।1

मूल्य की परिभाषाएँ :

मूल्य कोई मूर्त्त वस्तु नहीं है, जिसे हम देख सकें बल्कि 'मूल्य' अपने में एक धारणा है, एक अनुभव है, एक दृष्टि है। यही कारण है कि इसे परिभाषा में लांघना कठिन है। इसकी सार्वभौमिक स्थिति नहीं मानी जा सकती, उसकी सर्वमान्य परिभाषा दे पाना संभव नहीं है। पिफर भी एक धारणा को ग्राह्य बनाने के लिए उसके सम्बन्ध में कुछ अभिमत प्रस्तुत किये जा सकते हैं।

मूल्य की अवधारणा :

मूल्य सम्बन्धित विभिन्न परिभाषाओं के परिप्रेक्ष्य में संमजित रूप से कह सकते हैं कि मूल्य कोई मूर्त्त वस्तु नहीं अपितु मूल्यों का सम्बन्ध सम्पूर्ण जगत के मानवीय चिंतन एवं व्यवहार से है। चिंतन से मूल्यों की उत्पत्ति होती है। मूल्य मानवीय इच्छा और विश्वास से सम्बन्धित होते हैं। मूल्य समाज कल्याण की भावना से युक्त होते हैं।

मूल्य समाज की संस्कृति और सभ्यता की आधारशिला भी होते हैं। साहित्य में जिस सत्य की प्रतिष्ठा की जाती है, उसका लोकोपयोगी होना आवश्यक है। मूल्य अपने आप में बहुआयामी शब्द है। मूल्यों की अपनी कोई स्वतन्त्रा सत्ता नहीं है, क्योंकि मानव की मूल्यों का निर्माता एवं आधारभूत तत्त्व है। मूल्यों साहित्य अर्थवान एवं सौन्दर्यपरक बनाते हैं।

मूल्य का वर्गीकरण :

मूल्यों की धारणा अमूर्त्त होने के कारण इनके वर्गीकरण का कोई निश्चित आधार नहीं अपनाया जा सकता। विभिन्न विद्वानों ने अलग–अलग दृष्टिकोण से मूल्यों की महत्ता को प्रतिपादित किया है। भिन्न–भिन्न विचारकों ने मूल्यों का भिन्न–भिन्न प्रकार से वर्गीकरण किया है।

आर्थिक मूल्य :

भारतीय दर्शन में भी अर्थ को विशिष्ट स्थान दिया गया है। हर कार्य क्षेत्रा में धन को ही सर्वोपरि माना गया है। परन्तु आर्थिक मूल्य आधारभूत तभी तक है जब तक की वे जैविक आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन है। धन लोगों के जीवन का मुख्य केन्द्र बन गया है। अर्थ मनुष्य के व्यक्तित्व के विकास में बहुत महत्त्वपूर्ण साधन है। इसीलिए परिवार और समाज की आर्थिक स्थिति उसके जीवन मूल्यों को प्रत्येक क्षेत्रा में गहराई तक प्रभावित करते हैं। आर्थिक स्थिति के परिवर्तित होने के साथ–साथ उसके मूल्य भी बदलते रहते हैं।2

राजनीतिक मूल्य :

राजनीतिक शब्द संस्कृत का स्त्रीलिंग शब्द है। अर्थ है 'वह नीति जिसके अनुसार राजा अपने राज्य का शासन तथा प्रजा की रक्षा करता है। राजनीति से अभिप्राय राज्य को चलने वाली नीतियों से हैं।'राजनीतिक मूल्य' के सम्बन्ध में श्री गोबिन्द चन्द पाण्डे जी लिखते हैं–अराजकता का विरोध कर कानूनी व्यवस्था को बनाए रखना और उसके लिए शकित संग्रह करना यह राजनीतिक मूल्य है, व्यवस्था को धर्मानुरूप बनाना और सुधारना यह दूसरा राजनीतिक मूल्य है।3 महात्मा गांधी जी नैतिकता विहीन राजनीति को सड़ी लाश के समान मानते हैं। राज्य को सुव्यवस्थित बनाने के लिए उसे उन्नत बनाने के लिए जो आदर्श कानून बनाए जाते हैं। उन्हें राजनीतिक मूल्य की संज्ञा से अभिहित किया है।

सामाजिक मूल्य :

सामाजिक मूल्य व्यक्ति के आचरण को निर्देशित और मूल्यांकन

करने के आदर्श या मानदण्ड हैं।4 सामाजिक मूल्य किसी व्यक्ति विशेष के मूल्य न होकर समाज के सभी सदस्यों के मूल्य होते हैं।सामाजिक मूल्य हर रूप में एक सुसंस्कृत एवं विकासोन्मुखी समाज की वे महत्त्वपूर्ण जीवन दृष्टियाँ होते हैं, जिन्हें व्यक्ति को अपने विकास हेतु अपनाना ही होता है।5 अन्ततः कह सकते मूल्य निर्धारण करते समय सामाजिक मूल्यों की अवहेलना नहीं कर सकते।

नैतिक मूल्य :

नीति शास्त्रा में इस तथ्य का अध्ययन किया जाता है जो मनुष्य के आचरण को अच्छा उचित या शुभ बनाता है। नीतिशास्त्रा में मूल्यों का अध्ययन 'मूल्यवाद' के रूप में किया जाता है। नैतिकता मनुष्य के आचरण की ओर इंगित करती है। प्रायः धर्म और मोक्ष शब्दों का भी नैतिक मूल्यों में आंकलन किया जाता है, जिससे उसका क्षेत्रा व्यापक हो जाता है।6 नीतिशास्त्रा के आधार पर नैतिक भलाई और बुराई का मूल्य से सम्बन्ध है। नैतिकता मानव जीवन के आदर्शों की ओर इंगित करती है। नीति मूल्यों का व्यवहार औचित्य एवं शुभ के संदर्भ में ही प्रतिपादित करता है।

धार्मिक मूल्य :

सामान्यतः धर्म शब्द का प्रयोग कर्त्तव्य, गुण, नियम, कर्म, उदारता आदि अर्थों में लिया जाता है, धर्म एक ऐसी आधारशिला है जिसपर सभी मानव मूल्य जीवित है। धार्मिक मूल्यों का मानव जीवन में अत्यन्त महत्त्व है। हमारे यहाँ लोग धर्म को कर्मकाण्ड तक ही सीमित रखते है, वास्तविक जीवन से धर्म का कोई लेना देना नहीं है। बदलते परिवेश में लोगों की धर्म के प्रति आस्था समाप्त होती जा रही है। धार्मिक मूल्य खंडित एवं शिथिल हो गये है। धार्मिक मूल्यों के अन्तर्गत रूढ़ि भावना, रूढ़ि विरोध एवं धर्म क्षेत्रा में बढ़ता प्रदूषण देखा जा सकता है।

पारिवारिक मूल्य :

पारिवारिक मूल्यों की सामाजिक जीवन में महत्त्वपूर्ण भूमिका है। जो तत्त्व परिवार का संचालन कुशलता पूर्वक करते हैं, वहीं अन्त में मूल्यों का रूप धारण कर लेते हैं। यहीं पारिवारिक मूल्य परिवार की उन्नति तथा विकास में सहायक होता है। पारिवारिक मूल्य व्यवहारिक धरातल पर परिवार का संचालन करते हैं। परिवार में पारस्परिक सद्भाव, सहयोग और समर्पण के भाव विद्यमान रहते हैं। भौतिकतावाद की आंधी ने पारिवारिक नियमों व मूल्यों को नष्ट कर दिया है। जहाँ आपसी प्रेम, सहयोग, सौहार्द संयुक्त परिवार को मजबूत बनाता है, वहीं पारिवारिक मूल्यों को सुदृढ़ करता है, वहीं कलेश, कलह, द्वेष आदि की भावना संयुक्त परिवार का विघटन करती है और पारिवारिक मूल्यों का ह्रास भी करती है।

इस प्रकार संयुक्त परिवार हो या एकांकी परिवार, वहीं परिवार खुश रहता है जो अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर पारिवारिक हितों को सर्वोपरि मानता है। ऐसे परिवार में ही पारिवारिक मूल्यों की सुरक्षा होती है और पारिरिक मूल्यों को अपनाने से ही परिवार पफल–पूफल सकते हैं।

हिन्दी में भारतेन्दु की विरासत को लेकर जयशंकर प्रसाद ने अनेक नाटकों की रचना की है। आगे चलकर जगदीश चन्द्र माथुर और मोहन राकेश ने इसी परम्परा का निर्वाह करते हुए, उसमें लक्ष्मीनारायण मिश्र के समस्या नाटकों का भी समावेश है। कल से जीवन के अभाव, आम आदमी की तकलीपफों, सत्ता के मुखौटे, व्यवस्था की विकृतियों एवं प्रताड़ित नारी, आर्थिक विवशता में छले एवं रौंदे गये, स्त्राी–पुरुष, परिवार के मध्य टूटते बिखरते पति–पत्नी, बचे सम्बन्धों की संवादहीनता सभी तथ्यों पर नाटककारों ने अपनी लेखनी चलाई है। हिन्दी नाटककारों में लगभग सभी ने अपने नाटकों में परिवारों को किसी–न–किसी कारण से विघटित होते दिखाया है।

'प्रताप सहगल' के 'नहीं कोई अन्त' में दोहरा व्यक्तित्व जी रहे व्यक्ति को दिखाया गया है। वह प्रेम की तलाश में बाहर भटकता है। जबकि प्रेम घर में ही है। पति–पत्नी के बीच आई सम्बन्धों की दरार को दिखाया गया है। जहाँ कोई भी एक–दूसरे पर विश्वास नहीं करता। परिवार के टूटने का मुख्य कारण अहम् भावना, असंतुलन, अविश्वास, अकेलापन, घुटन सभी इस नाटक में दिखाए गए हैं, जिनका कोई अन्त नहीं।

मृदुला गर्ग के 'जादू के कालीन' नाटक के माध्यम से बाल मजदूरी, उनका शोषण को दिखाया गया है। परिवार में गरीबी के कारण टूटते रिश्ते, बच्चों को अपने से अलग करने जैसे स्थिति को दर्शाया गया है। बचपन खेलने की जगह गरीबी की चक्की में पिस्ते हुए बीतता है। गिरते मानव मूल्य, राजनीतिक मूल्य व आर्थिक मूल्य के बिखराव को दर्शाता नाटक है।

राजेश जैन का 'वायरस' नाटक मध्यवर्गीय परिवार और कर्त्तव्यहीनता की बेटियों की शादियाँ उचित समय पर नहीं कर पा रहे, को जहाँ एक दिखाया है, वहीं बेटियों की शादी की चिंता माँ–बाप को कैसे सताती है और इसी इंतजार में उनकी आँखें बंद हो जाती है। आज परिवारों के टूटने का सबसे प्रमुख कारण पति–पत्नी दोनों में अहम् की भावना है। कोई भी झुकने को तैयार नहीं। रिश्तों की गर्माहट ठंडी पड़ती जा रही है। विश्वास का अभाव, सम्बन्धों में असंतुलन ही परिवार को बिखरेता है।

देर–सवेर हर किसी अपराधी को दण्ड की प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है। इसी जीवन सत्य को उद्घाटित करता है, देवराज पथिक का नाटक 'सनातन सत्य'। यह असत्य पर सत्य की विजय का नाटक है। प्रस्तुत नाटक में गिरते मानव मूल्य, राजनीतिक मूल्य, संस्कारहीन जीवन, स्वार्थपरता, रिश्वतखोरी, लालच को दिखाया गया है। लेकिन अन्याय पर न्याय की ही जीत होती है। पैसा कुछ समय के लिए है, लेकिन सच्चाई की कमाई हमेशा साथ देती है और बनी रहती है।

'वर्तमान' विनय श्रीवास्तव के नाटक में फैले भ्रष्टाचार, बेरोज़गारी के कारण टूटते परिवार, विघटित राजनीतिक मूल्य, गिरता शिक्षा का स्तर इन सब पर व्यंग्य किया गया है। आज आम आदमी की कोई ज़िन्दगी नहीं बिना रिश्वत के डिग्रियों का कोई पफायदा नहीं है। बेरोज़गार व्यक्ति अपनी बेरोजगारी से हारकर जीवन से भी हार मान जाता है। दबे को ओर भी दबाया जाता है। स्वार्थपरता चारों ओर फैली हुई है।

भीष्म साहनी का नाटक 'माधवी' जो एक प्राचीन कथा पर आधारित है, किन्तु आज भी नया है। माधवी एक ऐसी स्त्राी जाति का प्रतिनिधित्व करती है, जो कभी पिता तो कभी कर्त्तव्यपूर्ति हेतु गालव का हर मोड़ पर साथ देती है। वह अपनी इच्छा को भी मार देती है। अंत में गालव जब उसे अपनाने से इंकार कर देता है तो वह तब भी उसका बुरा न चाहते हुए आशीर्वाद देते हुए कहीं दूर चली जाती है। इसमें नारी के कोमल मन, त्यागमय रूप को माधवी के माध्यम से दर्शाया गया है।

कृष्ण बलदेव वैद के नाटक 'भूख आग है' इसमें भूख का मानवीकरण किया गया है। यह एक विडम्बना प्रधान नाटक है। गरीबी के कारण पेट भर रोटी नहीं मिल पाती और जो भूखा है वही भूख के असली मायने बता सकता है। यह एक कॉमेडी नाटक नहीं है, इसमें बताया गया है कि ज़िन्दगी के प्रति हम कितने उदासीन व असंवेनशील हो गये हैं। गरीब व्यक्ति की मजबूरियाँ वास्तविकता को अमीर व्यक्ति नहीं समझ सकते।

'नाटक बाल भगवान' में एक गरीब परिवार का चित्राण किया गया है। गरीबी के कारण परिवार में रिश्तों के कोई मायने नहीं रह जाते। इसमें गिरते धर्मिक मूल्यों को दिखाया गया है।

विनय श्रीवास्तव के 'अंत्यज' में समाज में पफैले छुआछूत, जाति–पाति को दर्शाया गया है। धर्मिक मूल्यों में पाखण्ड बढ़ता जा रहा है। धर्म का स्थान अंधविश्वास, अमानवता, रुढ़ि भावना, अपवित्राता ने ले लिया है।

संदर्भ :

1. गोबिन्द चन्द्र पाण्डेय, मूल्य मीमांसा, पृ. 253–254

2. डॉ॰ मोहिनी शर्मा, हिन्दी उपन्यास और जीवन–मूल्य, पृ. 26

3. गोबिन्द चन्द्र पाण्डे, मूल्य मीमांसा, पृ. 112

4. गोबिन्द चन्द्र पाण्डे, मूल्य मीमांसा, पृ. 45

5. मोहिनी शर्मा, हिन्दी उपन्यास और जीवन–मूल्य, जयपुर साहित्यगार, 1986, पृ. 39

6. नीतिशास्त्रा, डॉ॰ शांति जोशी, ज्ञानमण्डल लि॰ बनारस, पृ. 159